स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा - तृतीय खण्ड — डॉ॰ मुन्ना साह
(अष्टम पत्र - साहित्य - सिद्धांत एवं हिन्दी आलोचना) हिन्दी विभाग
जे॰ के॰ कॉलेज

खण्ड (ख) पाश्चात्य साहित्य चिंतन — प्रतीक

'प्रतीक' शब्द को सामान्यतः 'चिह्न' के रूप में प्रयोग किया जाता है। अंग्रेजी में इसे 'सिंबल' (Symbol) कहते हैं। 'प्रतीक' ऐसे चिह्न अथवा शब्द चिह्न को कहते हैं जिसके माध्यम से अन्य वस्तु का बोध होता है। 'हिन्दी साहित्य कोश' के अनुसार "प्रतीक शब्द का प्रयोग उस दृश्य अथवा गोचर वस्तु के लिए किया जाता है जो किसी अदृश्य विषय का प्रतिविधान उसके साथ अपने साहचर्य के कारण करती है। अथवा कहा जा सकता है कि किसी अन्य स्तर की समान रूप वस्तु द्वारा किसी अन्य स्तर के विषय का प्रतिनिधित्व करने वाली वस्तु प्रतीक है। जैसे अदृश्य या अप्रस्तुत ईश्वर, देवता अथवा व्यक्ति का प्रतिनिधित्व उसकी प्रतिमा या अन्य कोई वस्तु कर सकती है।"

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'प्रतीक' शब्द की व्याख्या करते हुए लिखा है — "किसी देवता का प्रतीक सामने आने पर जिस प्रकार उसके स्वरूप और उसकी विभूति की भावना मन में आ जाती है, उसी प्रकार काव्य में आयी हुई वस्तुएं विशेष मनोविकारों या भावनाओं को जागृत कर देती हैं जैसे 'कमल' माधुर्यपूर्ण कोमल सौंदर्य की भावना जागृत करता है, 'कुमुदिनी' शुभ हास की, 'चन्द्र' मृदुल आभा की, 'समुद्र' प्राचुर्य विस्तार और गंभीरता की, 'आकाश' सूक्ष्मता और अनंतता की भावना को जाग्रत करता है। इसी प्रकार 'सर्प' से क्रूरता और कुटिलता का, 'अग्नि' से तेज और क्रोध का, 'वाणी' से वाणी या विद्या का, 'चातक' से निःस्वार्थ प्रेम का संकेत मिलता है।"

मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन प्रतीकों से परिपूर्ण है। वस्तुतः मनुष्य प्रतीकों के माध्यम से ही सोचता है।

कुछ प्रसिद्ध प्रतीक जिन्हें साहित्य या व्यवहार में प्रयोग किया जाता है वे हैं — 'सिंह' वीरता का, 'श्वेत रंग' पवित्रता का, 'शृगाल' कायरता का और 'लोमड़ी' चतुरता की प्रतीक है।

धार्मिक क्षेत्र में देखा जाए तो — 'त्रिशूल', नंदी, चंद्र, शिव का, गरुड़ और शंख विष्णु का। पीटर्स ने दो बताए (1) ध्वनि प्रतीक (2) विचार प्रतीक (संवेगात्मक एवं बौद्धिक)

Scanned with CamScanner